



## मानव क्लोनिंग से जुड़े नैतिक पक्ष

[drishtiias.com/hindi/printpdf/human-clonning](http://drishtiias.com/hindi/printpdf/human-clonning)

- ❖ मानव एक ऐसी जीविक रचना है जो एकमात्र जनक (बर या मादा) से गैर-लेणिंग विधि द्वारा उत्पन्न होता है। उत्पादित वलोन अपने जनक से शारीरिक एवं आनुवंशिक रूप से पूर्णतः समरूप होता है।
- ❖ मानव शिशु के मामले में माता और पिता के पद की जब दो अर्द्ध-शुश्री जनविक कोशिकाओं आपस में संयोजित होती हैं तो उनके मेल से बनकर वाली नई कोशिका में पूरे 46 गुणसूत्र (Chromosomes) होते हैं। इस प्रक्रिया को जिंखेव (Fertilisation) तथा जो रचना बनती है उसे 'युज्जनो' (Zygote) कहते हैं। यह युज्जन गर्भ में समय के साथ विकसित और विभाजित होते हुए अन्ततः बाहर जीव के रूप में जन्म लेता है।
- ❖ इस तरह एक कोशिका से अस्त्रों कोशिकाओं वाले मनुष्य का जिम्मेदार होता है। हर कोशिका में जीव के जिम्मेदार के लिये सभी सुवर्णों मौजूद रहते हैं।
- ❖ गैर-लेणिंग विधि से सोमोटिक सेल्स (Somatic Cells) द्वारा जीव के जन्म की संभावनाएँ ज्ञाने के प्रयत्नों की पर्यावरण में ही क्लोनिंग की तरलीक विकसित हुईं।
- ❖ घर्म-जु़ु़जाओं तथा उनमें हस्तक्षेप करके ईवटीय प्रकृति वक्र को बियोवित करने की अनेक वेष्टा ही की जा रही है जिसके परिणाम मधातक होंगे।
- ❖ मानव क्लोनिंग का लोकर नैतिक ढंड की रियति बनी हुई है।

### क्या है वलोन?

### मानव क्लोनिंग से जुड़े नैतिक पक्ष

- ❖ मानव क्लोनिंग में न सिर्फ पूरे मानव वर्तिक मानव शरीर के किसी विशेष हिस्से की भी क्लोनिंग द्वारा विकसित किया जा सकता है।
- ❖ अमरीका के अंग प्रत्यारोपण या प्लास्टिक सर्जरी जैसी शब्द-विविलताओं के प्रयोग कई बार शरीर आसानी से बाहर से आरोपित अंगों की स्थिकता बही करता, जबकि वलोनों द्वारा विकसित अंग जैसीक रूप से तिलाज से प्राप्तकर्ता की कोशिकाओं के छ-व-हू प्रतिलिप होते हैं।
- ❖ न रिंग द्वारा जीविति में बालक अनेक शीर्षकार्यों के द्वारा अवश्यक अंग प्रत्यारोपण के लिये अंगों की अपार्टेंटेन्ट क्लोन का उपयोग दिया जा सकता जिससे न सिर्फ अंगों के अंग व्यापार एवं मरीजों के शोषण पर रोक लगा सकता है। अत्यंत शरीर द्वारा प्रत्यारोपित अंग का बनकर देने से उजले वाली संस्करणों भी बही उपयोग होता है।
- ❖ विकिलीय शोध के लिये अत्यधिक शरीर भी क्लोन के प्राप्तकर्ता से मुक्त्या कराया जा सकता बीमान कोशिका से विकसित क्लोन वीमानी का सारे लक्षण दर्शाता जिससे उस पर शोध करना अधिक कठिनाई होगा।

- ❖ इतनी महत्वपूर्ण विधि से जुड़ी आशंकाओं के विचारण से पहले मानव क्लोनिंग को अनुमति प्रदान करना अवित्त बही होगा।
- ❖ इस दिशा में होने वाले शोधों की बैतिक दिशा तथा की जाए एवं उसे काबूली रूप से भी लाभ करने हेतु सक्षम व्यवस्था का जिम्मेदार हो।
- ❖ अंततः विज्ञान से जुड़े हर मसले पर होने वाले नैतिक-विमर्श के समान ही मानव क्लोनिंग पर होने वाला विमर्श भी बैतिक एवं वैज्ञानिक तर्कों से ही संबंधित होना चाहिये, न कि अति-उत्तराध या फिर अकारण भ्रम अथवा लहियों से।

### निष्कर्ष

### क्लोनिंग का नैतिक पक्ष

### क्लोनिंग का अवैतिक पक्ष

- ❖ उल्लेखनीय है कि अमू-विज्ञान के विद्यमान लोगों वाले वैज्ञानिक इनकी संभावनाओं के प्रति अति-उत्साही हैं परंतु इनका पहला प्रयोग जिसी सुनुनालक मकासद में ही अपितु विद्युत-साक शैदी के दिले हुआ।
- ❖ इस द्वारा जीवित अंगों का विकास करने के पश्चात उन्हें मातृ-वीरोधिकाओं से अलग कर द्वारा शरीर में प्रत्यारोपण करने की प्रक्रिया का बाश होना या उन्हें विकसित करने की प्रक्रिया में जिल्ली बार अंतर्लाला भिन्नाल के कारण उसारे अंग विकसित होने की अपितु प्रक्रिया की कार्यकारीता का उत्तराधीन नहीं होता है। अतिरिक्त वे कोशिकाओं एवं अंग मशीन अव्याय उपकरण नहीं बीलकं जीवन से पूर्ण छुलाहयों होती हैं। इसी प्रकार यह कलन के वलोन का उत्तराध विविलता में शोध के लिये ही सकता है, इस बात को जल्द अंदाज करना है कि वलोन भी अव्याय एक जीवित मनुष्य, वाहे उसका ज्ञानों विकास करने ही हुआ है, के जीवन के अधिकार का हाल करने तेरे शोध हेतु उपयोग में ला सकता।
- ❖ मानव क्लोनिंग से विकसित क्लोन का उत्तराध विविलता में शोध के लिये ही सकता है, इस बात को जल्द अंदाज करना है कि वलोन भी अव्याय एक जीवित मनुष्य होता है, तो उक्ते शोधकार्य का सारा खुल जाएगा।
- ❖ अंततः क्लोन को मानव के बराबर दर्जा एवं अधिकार नहीं दिया जाय तो उक्ते शोधकार्य का सारा खुल जाएगा। यह समावना बहुत सशक्त है कि विद्युती भी वैज्ञानिक की कोशिकाओं से उत्तराध कलोनी सुनुनाली के विनाही तैयार कर लिया जाए। अभी ऐसा विस्तृत तंत्र नहीं है जो इस संभावना के सच होने की स्थिति में उस पर रोकथाम लगाए।